इश्क रूपी मार्ग

श्रीमती किरण सेठी देहली

पूज्यनीय सुन्दरसाथ जी आज हम यहाँ क्यों और कैसे आये हैं। इन बातों को हम अच्छी तरह जानते हैं लेकिन माया की गफलत में डूबकर सब कुछ भूल गये हैं। आज हम कुयें के मेंढक कीं तरह इस दुनियां की चार दिवारी मे कुछ इस कदर उलझ गये हैं कि बाहर क्या है इसका हमें आभास ही नहीं। 'पियाजी' ने अपनी पहचान के लिए वाणीं रूपी निधि प्रदान की है। हम इश्क रूपी रास्ते पर चलकर अपने 'पिया' से मिल सकते हैं। ये बात तो हम बहुत शीघ्र कह देते हैं कि हम अपने धनी से इश्क करेंगे और उसके लिए चाहे हमारा सिर भी कट जाए तभी हम अपने धनी से मिल सकते हैं। बड़े मजे से चौपाइयाँ भी पढ़ लेंगे कि इश्क के रास्ते पर कितनी कूर्बानी देनी पड़ती हैं भजन भी गाते हैं कि ये शीश देकर भी यदि तेरे दीदार हो जायें तो भी हमें ये सौदा मंजूर हैं। लेकिन मेरे प्यारे साथ जी, कहना कितना आसान है पर उस पर अमल करना बहुत ही मुश्किल है। इश्क के मार्ग में कितनी बाधायें आती हैं ये तो हमें दुनिया के उदाहरणों में भी देखने को मिलता है। जैसे लैला-मंजनू, शिरी-फरहाद आदि। इनको आजकल के बच्चे भीं जानते हैं। इन लोगों ने मात्र अपने बजूदों के इश्क के कारण कितने कष्ट सहे पर कभी उफ तक नहीं किया। उनको तो सिर्फ मिलन की चाह थी। उसके आगे उनको दुनिया की कोई चीज दिखाई नहीं देती थी। चाहे लोग पत्थर मारें या कुछ भी फब्तियाँ कसते रहें मगर वे दुनिया से बेखबर अपने में ही खोये रहते थे। जब लोग वजूदों के कारण इतना अपनी खुदी को मिटा सकते हैं। तो हम क्यों मुरदार बने बैठे हैं। क्यों अपने उन सगे सम्बन्धियों से चिपके हुए हैं जिनसे हमें कुछ भी हासिल नहीं होना। उनकी खातिर आप हम अपने 'पिया' से मुख मोड़ लेते हैं। आज हमारी आँखों के आगे गफलत का पर्दा पड़ा हुआ है इस-लिए हमें अपने 'पिया' दिखायी नहीं देते, उनकी साहिबी या मेहर का पता नहीं चलता। सिर्फ हम वजूद के अवगुणों को ही देखते रहते हैं। आज अपनी झूठी इज्जात के पीछे जान लड़ा रहे हैं। अरे, हमें अपनी बिरादरी में रहना है, हमारे भी खानदान की परम्परायें हैं। वाह मेरे आदरणीय सुन्दरसाथ जी जब इस तरह की बातें अपने ही लोगो में देखने और सुनने को मिलती हैं तो दिल कितना तड़प उठता है। वो दर्द जो अपने 'पिया' के लिए होना चाहिए था वो अब हमारे खानदान में है।

Nijanand App

कहाँ गया वह इश्क जिसके लिए इतनी-इतनी डींगें मारा करते थे परमधाम में। वहां तो अपने इश्क को बहुत बड़ा कहा करते थे न और अब यदि हमारे आगे एक भी काँटा आ जाता है तो हम घबरा जाते हैं। जबकि ये जानते हैं कि इस राह पर काँटों के अलावा कुछ नहीं। एक बिरहिनी को वो अपने शरीर की सुध नहीं होती। जिसे अपने 'पिया' से सच्चा इश्क हो वो अपने इस झूठे तन की इज्जत नहीं देखा करते। जब ये तन ही उसके चरणों में सौंप दिया तो इज्जत किसकी। इस राह पर चलने वालों को कुर्बानी देनी पड़ती है। वाणी में ये नहीं लिखा कि आप 'पिया' के इश्क में घर बाहर त्याग दो। नहीं यहाँ बैठकर भी अपने 'पिया' से इश्क किया जा सकता है पर उसके लिए इसमें खुदी को मिटाना होगा। बस हमेशा हम अपने पिया को ही सन्मुख रखें। ठीक है, वजूद की समस्याएँ तो हर किसी के साथ हैं क्योंकि माया में बैठे हैं। लेकिन उसका मतलब ये तो नहीं कि हम अवगुण ही ग्रहण करने लग जाए। अपने पिया को भूलकर सिर्फ वजूद को ही पकड़ लें। पिया के सामने उसकी सभी अंगनायें एक जैसी है क्योंकि आज हमारे ऊपर माया का आवरण चढ़ा हुआ है इसलिए हमें उनकी मेहर भी भिन्न-भिन्न दिखायी देती है। हमें एक दूसरे से ईर्ष्या होने लगती है। हम यह नहीं समझते कि उनसे हमारा नाता धाम का है, शरीर का नहीं। और अमीरी गरीबी तो शरीर के साथ है उसका धनी से क्या सम्बन्ध।

इश्क रूपी मार्ग पर चलना बहुत ही कठिन है पर असम्भव नहीं है। इसमें बहुत सी कठिनाईयाँ सामने आती हैं, बहुत कुछ सहना पड़ता है सुनना पड़ता है। यदि पिया से सच्चा इश्क हो तो ये कठिनाईयाँ भी पार हो जाती हैं। श्री "राज जी महाराज" ने वाणी में स्पष्ट लिखा है कि पिया से इश्क करने के लिए तलवार की धार पर चलना है। हम सब सोचते हैं कि न जाने क्यों इस दुनिया में दिल नहीं लगता। न तो इस दुनिया में दिल लगता है और न धनी की याद आती है। आज हम इस कदर वजूद के दायरे में बँध गये हैं कि आत्मा तो छटपटाती है वो तो अपने ठौर पर जाने के लिए तरसती हैं पर वजूद वहीं अड़े रहते हैं। क्योंकि हमारे अन्दर अब वह दर्द ही नहीं है। यदि आप हमारे अन्दर 'पिया' के इश्क की वह मस्ती होती जो होनी चाहिये तो हम एक पल भी उनके बिना न रह पाते। मगर हम लोग तो बड़े ठाठ से रह रहे हैं। बड़े फखर से ये कहते हैं कि हमें तो 'पिया' की याद कभी आती ही नहीं। हमतो उनको याद किये बिना भी रह सकते हैं। उस समय इतनी बात सुनकर आत्मा चीत्कार कर उठती है। उस धनी को हम आज भूला बैठे हैं जिनसे हमारा एक असल नाता है जो हमारे खाविन्द हैं। जिन्होंने हमारी खातिर आज तक न जाने कितने-कितने कष्ट सहे हैं। जब 'पिया' अपनी प्यारी रूहों का ये रूप देखते होंगे तो उन पर क्या बीतती होगी इस पर हम कभी विचार ही कर लें अतः अब मैं ज्यादा कुछ न कहते हुए अपने पूज्य साथ जी से हाथ जोड़कर विनती करूँगी कि हम कुछ तो

Nijanand App

विचार करे। पिया जी ने कितने-कितने कष्ट सहकर हमें जगाया है। अब तो कम से कम हम नहीं भूले क्योंकि वाणी में भी लिखा है।

"जब लग भूली नींद में, तब लग नहीं दोष
जहाँ जागो हक इलम ले, तब भूली सिर अफसोस

हमें वक्त आखरित को न पछताना पड़े इससे पहले ही हमें इश्क रूपी मार्ग पर चलकर मंजिल को पा लेना चाहिए। मार्ग की कठिनाईयों को भी पार करते हुए सिर्फ अपने धनी के इश्क में ही हर पल लीन रहे। इतना ही कहकर मैं अपने परम आदरणीय साथ जी से अपनी त्रुटियों के लिए क्षमा चाहूँगी।

भजन

कुमारी-अंजु परनामी
श्री गंगानगर (राज०)

तर्ज–जब हम जवाँ होंगे (बेताब)

शिकवे लिए लब पे, बैठी तेरे दर पे
हुई क्या खता मुझसे, जो तेरा प्यार न मिला।
दीदार न मिला

(१) घुट के रह गए अरमाँ मेरे सीने में
रही उम्र भर गम के आँसू पीने में
सुख का कोई पल भी मुझे उधार न मिला
शिकवे.....

(२) फेर लिया अब मुँह अपने बेगानों ने
घेर लिया जब नफरत के तूफानों ने
नैया बचाने को कोई पतवार न मिला
शिकवे.....

(३) दुनियाँ ठुकराये तो पिया को याद करे
पिया ठुकराये तो किससे फरियाद करे
तेरे जैसा कोई दरबार न मिला
शिकवे.....

Nijanand App